IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

कामकाजी महिलाओं की घरेलू समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

रीता सिंह[1] एवं डॉ. किरण सिंह[2]
शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.) [2]

शोध सारांश

भारतीय संस्कृति की पावन परंपरा में नारी को सदैव सम्माननीय स्थान प्राप्त हुआ है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति व अवनति वहाँ के नारी समाज पर अवलंबित है। जिस देश की नारी सशक्त, जाग्रत एवं शिक्षित हो, वह देश संसार में सबसे उन्नत माना जाता है। 'मनुस्मृति' में भी कहा गया है "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता" नारी नर की खान है। वह पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए गौरव और विश्व के लिए करूणा संजोने वाली महाकृति है। नारी का मानव की सृष्टि में ही नहीं, वरण समाज निर्माण में भी महत्वपूर्ण स्थान है। नारी और पुरूष मिलकर परिवार का निर्माण करते है। अनेक परिवारों से समुदाय और अनेक समुदायों से मिलकर एक समाज निर्मित होता है। यदि हम विश्व इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमें यह पता चलता है कि संस्कृति की नींव डालने का श्रेय सर्वप्रथम नारी को ही दिया जाता है। परन्तु नारी की प्रस्थिति सभी समाजों में एक–समान नहीं है। जिस तरह परिवार में नारी व पुरूष के कार्य व स्थान भिन्न–भिन्न होते है, उसी तरह समाज में भी नारी और पुरूष के कार्यो व स्थान में भिन्नता पाई जाती है। भारतीय नारी की सामाजिक प्रस्थिति और समस्याओं का अध्ययन अपने में एक बड़ा कठिन विषय है। वर्तमान में महिलाओं के प्रति अनेक प्रकार के अपराध हो रहे है। 'अपराध' कानूनी रूप से परिभाषित शब्द ही नहीं है, अपितु सामाजिक दृष्टि से भी परिभाषित शब्द है। महिलाओं को शारीरिक व मानसिक यातनाएं देना, उसके साथ मार–पीट करना, उसका शोषण करना, नारीत्व को निवस्त्र करना, भूखा–प्यासा रखना, जहर आदि देकर दहेज की बलि चढ़ा देना आदि महिलाओं के प्रति अपराध ही कहें जाएंगे। इस प्रकार से सम्पूर्ण देश में महिलाओं के प्रति अपराधों एवं हिंसक घटनाओं की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति सदियों से दयनीय रही है, उनका हर स्तर पर शोषण और अपमान होता रहा है। पुरूष प्रधान समाज होने के कारण सभी नियम, कायदे पुरूषों के हिंतो को ध्यान में रख कर बनाये जाते रहें। खेलने और शिक्षा ग्रहण करने की आयु में बेटियों की शादी कर देना उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित होता रहा है।

मुख्य शब्द – भारतीय, नारी, समाज, कामकाजी महिला, घरेलू हिंसा, पुरूष, शोषण आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

[1]. आहूजा राम – 2009 भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेषन, जयपुर।
[2]. शर्मा अनुपम – 2013, इक्कीसवीं शताब्दी में महिला समस्याएं एवं संभावनाएं, अल्फा प. नई दिल्ली।
[3]. कपूर डॉ. प्रमिला – 2009 कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली।
[4]. परमार दुर्गा – 1982 श्रमजीवी महिलाएं और समकालीन पारिवारिक संगठन, साहित्य भवन आगरा।
[5]. गुप्ता सुभाषचन्द्र – 2004 कार्यषील महिलाएँ एवं भारतीय समाज, अर्जुन प. हाउस, नई दिल्ली।
[6]. गुप्ता पंकज – 2014 मानवाधिकार और महिलाएँ, साहित्यागार प्रकाषन, जयपुर।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

[7]. https://www-patrika-com 8& http://ignited-in 9& https://m-jagran-com 10& https://www-saicarefoundation-com